बाबा तब तक बोलेगा

(नाटक शुरू होने पर ढोलक की ताल पर तीन पात्र मंच पर आते हैं। उनकी चाल से उनका मेंढक होना स्थापित होता है। वे मंच का इस तरह से चक्कर लगाते हैं जैसे कुएं का चक्कर लगा रहे हों। ढोलक के बंद होते ही तीनों पात्र अपनी-अपनी पोजीशन ले लेते हैं।)

मेंढक राम : टर्र, टर्र, टर्र, मैं पंडित मेंढक राम।
इस कुएं में अगर सौ ईंटें, अस्सी पर है मेरा नाम।
मैं हूं इस कुएं का मालिक,
सुन रे ज्ञानी मेंढक सिंह और मेंढक रहमान।
अगर चाहते हो इस कुएं में रहना,
तो तुम्हें मानना पड़ेगा मेरा विधान।

मेंढक रहमान : टर्र, टर्र, टर्र
सुन रे पंडित मेंढक राम
मेरे भी पूर्वजों का
इस कुएं में योगदान महान।
ये महल, मकबरे, मस्जिदें
जो हैं इस कुएं की शान।
वो मेरे ही पूर्वजों ने बनाए
जानता है सारा जहान।
मस्जिद जहां बनी है
वहीं रहेगी
अगर तेरा नाम है पंडित मेंढक राम,
तो मुझे भी कहते हैं, मौलाना मेंढक रहमान।

ज्ञा. मेंढक सिंह : सुन ले पंडित मेंढक राम,

और तू भी कान दे, मौलाना मेंढक रहमान।
इस कुएं पर मेरा बड़ा अहसान।
बेशक सौ में से दो ही ईंटें,
जिन पर मेरा नाम।
पर इन दो ईंटों के कारण,
कुआं बचा है।
यह जानता है सारा जहान।
जब भी बाहर से कोई हमला हुआ,
मैं ही बना कुएं की ढाल।
अब अगर मैं कुछ हिस्सा मांगूं,
कहते हो अलगाववादी शैतान।
हक़ मैं अपना लेकर रहूंगा,
ज्ञानी मेंढक सिंह मेरा नाम।
(इसके बाद एक दूसरे के विरुद्ध गुस्सा दर्शाते हैं। टर्र, टर्र, पंडित मेंढक राम, मौलाना मेंढक रहमान, ज्ञानी मेंढक सिंह की आवाज़ें शोर में से उभरती हैं। एक खद्दरधारी मंच पर आता है।)

खद्दरधारी : मैं हूं नेता, देश का मालिक,
सरकार का चालक,
इनको लड़वाता हूं मैं।
भ्रष्टाचार की तरफ लोग अगर करें ध्यान।
महंगाई के विरुद्ध अगर उठे अवाम।
बेरोजगारी के खिलाफ अगर उठे संग्राम
तो खतरे में आज जाता है,
पंथ, दीन और राम।
इनको लड़वाता हूं मैं, तभी तो राज चलाता हूं मैं
इनमें अगर हो सुलह-सफाई
इसमें मेरी नहीं भलाई।
किसी को उंगली, किसी को चोगा, किसी को थपकी।
बारी-बारी से उकसाता हूं मैं,
इनको लड़वाता हूं मैं, तभी तो राज चलाता हूं मैं।
(उनको उकसाता है, तीनों एक-दूसरे पर उबलते हैं, टर्र टर्र का शोर मचाते हैं, बाबा का आगमन।)

बाबा : चुप करो, तुम हो मेंढक।
टर्र टर्र करते मूर्ख मेंढक।
अक्ल के दुश्मन, हो तुम मेंढक।
रोशनी के दुश्मन हो तुम मेंढक।
मज़हबों के डसे हो तुम मेंढक।
प्रगति के दुश्मन हो तुम मेंढक।
बाहर क्या हो रहा, न जानो तुम मेंढक।
(तीनों एक साथ लम्बी टर्र टर्र करते हैं)
सुन रे पंडित मेंढक राम,
यहां हैं नौ करोड़ बेरोजगार,
उनके बारे में तेरा है क्या विचार?

पं. मेंढक राम : यह तो सीधा सा सवाल,
एक-एक करके कुएं में मारें छलांग,
हल हो जाएगा यह सवाल।
('ओम जय जगदीश हरे' की तर्ज पर टर्र-टर्र करता है।)

बाबा : सुनो जी मौलाना मेंढक रहमान,
यहां 40 करोड़ भुखमरी में जी रहे,
भूखे रात को घुटनों में पेट दबाकर सोते
आपने कभी इस बारे में सोचा हुजूर?

मौ. मेंढक रहमान : हां हमने सोचा है ज़रूर।
सोए जो, सोते रहें, लेकर अल्लाह का नाम।
जन्नत में मिलेगी उनको हूर
हल हो जाएगा यह सवाल, मेरे हुज़ूर।
(बांग देता है)

बाबा : ज्ञानी मेंढक सिंह जी,
लुट रहा है किसान,
आपको है कोई ज्ञान?

ज्ञा. मेंढक सिंह : हमें है पूरा ज्ञान,
क्यों लुट रहा है किसान।
हमें यह बताने की फुर्सत नहीं।
हमें मोर्चे लगाने से फुर्सत नहीं।

बाबा : सुन मौलाना मेंढक रहमान,

मेंढक ज्ञानी सिंह, पंडित मेंढक राम
आज का युग है विज्ञान का युग।
कुछ समझने-समझाने का युग।
धोखे से जो राज कर रहे,
उनकी पहचान का युग।

खद्दरधारी : सुनो न इसकी, यह है बड़ा चंट बाबा
गुमराह कर रहा तुम्हें, यह है विदेशी एजेंट बाबा
तीन पीढ़ियों से तुम्हारी सेवा कर रहा,
मैं हूं आपका सेवादार।
मेरे नाना ने देश आज़ाद करवाया,
जानते हो तुम सब इतिहास।
दूर गरीबी मेरी मां ने की,
ऐसी चलाई उसने सरकार।
मैं भी तुमसे दूर नहीं हूं,
पूरा हूं तुम्हारा खिदमतगार।
हर रोज़ टी.वी. पर देता हूं दीदार।

बाबा : यह झूठ बोलता है, कुफ्र तौलता है।
फांसियों पर चढ़े जो, वे थे और।
काले पानियों में गल गए जो, वे थे और।
गद्दियों की खातिर समझौता कर गए जो, वे हैं चोर।
राज भ्रष्टाचार का यह है चलाता।
दलाली का पैसा यह है खाता।
विदेशी बैंकों में खातेद्द है चलाता।
ढोंग देशभक्ति का है यह रचाता।
यह है ढोंगी, यह है चोर।
यह है दंभी, कुछ नहीं और।

खद्दरधारी : यह बाबा बेकार की हांकता है।
ग़लत है, जो कुछ भी कहता है।
अगर विदेशी बैंकों में मेरा है खाता।
तो विरोधियों में भी नहीं कोई दूध नहाता।
अगर बाबा कहता है मैं चोर।
तो बाबा बताए, कौन नहीं है चोर?

बाबा : धरती के पचानवें
सौ में से नहीं हैं चोर।
खेतों में खून पसीना एक जो करते,
वे हैं क्योंकर चोर?
कारखानों में मजदूरी जो करते,
वे हैं क्योंकर चोर?
पत्थर तोड़ते, रिक्शा चलाते,
वे हैं क्योंकर चोर?
सौ में पांच हैं असली चोर
छुपाने को वो अपनी चोरी
सबको कहते चोर।

पं. मेंढक राम : अच्छा-अच्छा, पर तू हमें क्या देगा?

मौ. मेंढक रह. : तेरे पास क्या है?

ज्ञा. मेंढक सिंह : कोई कारूं का खज़ाना है?

बाबा : मेरे पास तुम्हें देने के लिए रोशनी है।

एक साथ : टर्र, टर्र, टर्र।

पं. मेंढक राम : हमें रोशनी की ज़रूरत नहीं।

मौ. मेंढक रह. : हम मेंढक हैं।

ज्ञा. मेंढक सिंह : कुआं हमारा निवास स्थान है।

पं. मेंढक राम : हमने नहीं बाहर आना।

मौ. मेंढक रह. : हम यहीं पर मुतमइन हैं।

ज्ञा. मेंढक सिंह : जो सुख छज्जू के चौबारे।

एक साथ : ना वो बलख, ना बुखारे।

खद्दरधारी : शाबाश-शाबाश।
पंडित मेंढक राम जी,
मैं आपकी मैली गंगा उजली करवाऊंगा।
मौलाना मेंढक रहमान जी,
आपके लिए कुतुब से ऊंची मस्जिद बनवाऊंगा
ज्ञानी मेंढक सिंह जी,
आपके वाहेगुरु के घर पर, सोने का कलश लगवाऊंगा।
(दर्शकों से)
ऐसे खेलता हूं मैं अपना खेल।

और धर्मनिरपेक्षता की चल रही स्टेट।
(तीनों हाथ जोड़कर उसके पास आते हैं।)
(बाबा से)
बाबा जी अब क्या है विचार?
देख लिया तेल और तेल की धार।

बाबा : देख लिया तेल और तेल की धार।
सदा नहीं चलेगा तेरा यह हथियार।
दिन वो दूर नहीं जब जनता,
देखेगी कुएं से बाहर।
बेशक यह है आज का सांच।
पर कभी तो टूटेगा यह कांच।
पीढ़ी दर पीढ़ी बने भ्रम टूटेंगे।
बनाने को नया संसार सब जुटेंगे।
भेद तेरा सब खोलेगा।
बाबा तब तक बोलेगा।